मालवा प्रदेश के प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटको का संचरण प्रतिरूप

अनिमा

शोध छात्रा पी एच डी (भूगोल), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

सारांश **:-**मालवा प्रारम्भ से ही सुखद व सुहावनी जलवायु के कारण पर्यटको के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहॉ आ रहे पर्यटक एवं उनके उद्देश्यों का जानना एक जटिल कार्य है। पर्यटको के संचरण प्रतिरूप के यथार्थ रूप को जानने हेतु पर्यटको से गहन सम्पर्क आवश्यक है। पर्यटन संबंधी सूचनाएँ मुख्यतः पर्यटको का वितरण स्वरूप, पर्यटको की आयु, लिंग व वैवाहिक स्तर, पर्यटको की विश्राम की अवधि, शिकायते, प्रतिक्रियाएँ, सुझाव इत्यादि से संबंधित विशेषताओं का अध्ययन पर्यटक की विशेषताओ से परिचित कराता है। इन विशेषताओ का अध्ययन क्षेत्र के भावी पर्यटन विकास में सहायक सिद्ध होता हैं।

शब्द कुंजी : प्राकृतिक पर्यटन, पर्यटक, संचरण प्रतिरूप।

प्रस्तावना :

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में आ रहे पर्यटको के संचरण प्रतिरूप द्धारा पर्यटन सर्किट का निर्धारण करना ताकि भविष्य में उसी के अनुसार पर्यटन उद्योग को विकसित किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान अध्ययन हेतु मालवा प्रदेश का चयन किया गया है जो मध्य प्रदेश की एक महत्वपूर्ण भौगोलिक इकाई है जिसके अंतर्गत राज्य के 16 जिले सम्मिलित है, यथा – नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, शाजापुर, राजगढ, इन्दौर, उज्जैन, भोपाल, देवास, सीहोर, रायसेन, विदिशा, गुना तथा सागर। इसका भौगोलिक विस्तार 21054′ उत्तरी अक्षांश से 23030′ उत्तरी अक्षांश तक एवं 74024′ पर्वी देशांतर से 78029′ पूर्वी देशांतर के मध्य तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 105450 वर्ग कि.मी. है।

आंकड़ो का स्त्रोत एवं विधि तंत्र

प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों के अध्ययन हेतु क्षेत्र के चयनित पर्यटन केन्द्रों पर वर्ष 2011 व 2012 के मध्य विस्तृत जानकारी प्रश्नावली द्धारा ज्ञात गई है। द्वितीयक ऑकडों का संकलन प्रकाशित स्त्रोतो तथा पर्यावरण व पर्यटन संबंधित पत्रिकाएं, पर्यटन कार्यालय, तथा इंटरनेट, आदि से प्राप्त किए गए है। इन ऑकड़ों के संकलन के उपरान्त उनका सारणीयन और विश्लेषण यादृच्छिक विधि से चुने हुए लगभग 50 प्रतिशत पर्यटन स्थलों पर आए लगभग 5 प्रतिशत पर्यटक ऑकडो के आधार पर किया गया है।

पर्यटको का संचरण प्रतिरूप

भारत के विभिन्न क्षेत्रो से पर्यटक भ्रमण के लिए मालवा प्रदेश में आते है। परन्तु क्षेत्र में आ रहे पर्यटक निकटवर्ती केन्द्रो से अधिक थे। विदेशी पर्यटको में प्रायः पर्यटक श्रीलंका, चीन, नेपाल, आदि से अधिक आए थे। परन्तु यदि अन्य क्षेत्रो से तुलना कि जाय तो अध्ययन क्षेत्र में आने वाले विदेशी पर्यटको का आगमन बहुत कम है। भोपाल, मांडू, भीमबेटका, उदयगिरि आदि केन्द्रो को छोड दिया जाय तो अन्य केन्द्रो में विदेशी पर्यटको को आगमन नहीं होता है। कुल पर्यटको का मात्र 2 प्रतिशत विदेशी पर्यटक ही पर्यटन केन्द्रों में भ्रमण हेतु आए थे।
पर्यटक संचरण के अंतर्गत मुख्य रूप से तीन तत्व आते है–

1 पर्यटक उत्पाद स्थान
2 पर्यटक गन्तव्य स्थान
3 यात्रा पथ

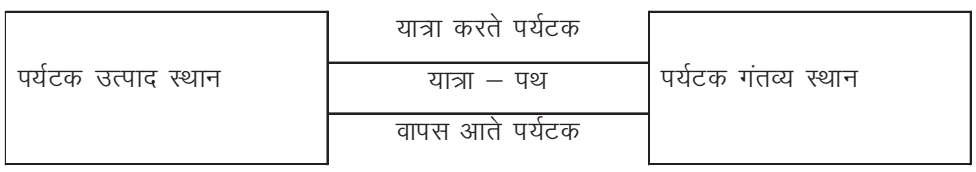

(स्त्रोत – Leiper, N (1990c) Partial industrialization of tourism system. Annals of Tourism, 17(4), 600-605)

पर्यटक उत्पादक स्थान

पर्यटक उत्पादक स्थान से आशय उन स्थानों या देशों से है जहॉ पर्यटन को प्रोत्साहन मिलता है एवं जो प्राकृतिक पर्यटन रूपी बाजार को जन्म देता है, आगे बढाता है व प्रभावित करता है। इन्हीं स्थानों में पर्यटक पर्यटन संबंधी जानकारी प्राप्त करता है, गन्तव्य तय करता है, टिकिट क्रय करता है तथा पर्यटन के लिए यहीं से प्रस्थान करता है।

पर्यटन गन्तव्य स्थान

यात्रा का अंतिम पडाव होता है जो छोटी या बडी भौगोलिक इकाई हो सकती है। यह स्थान यदि किसी घटना से जुड जाता है तो आकर्षण दुगना हो जाता है यथा – वन शिविर, कैम्पिंग, सफारी रेंज, ट्रैकिंग, पदयात्रा, पैरासेलिंग, मत्स्यन, बोटिंग, नौकायान आदि साहसिक खेलो के समय पर्यटन अपने चरम स्तर पर होता है जो पर्यटको को अपनी तरफ आकर्षित करता है। पर्यटको को उत्सुकता जाग्रत कर पर्यटन रूपी मशीन को संचालित करता है। जिस स्थान की मांग अधिक होती है पर्यटक भी उसी स्थान की ओर अधिक आकर्षित होते है।

यात्रा पथ

यात्रा पथ के अभाव में पर्यटन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गन्तव्य स्थान व उत्पादक स्थान को जोडने में यात्रा पथ का महत्वपूर्ण योगदान होता है। पर्यटक अपने गन्तव्य स्थान की ओर जाते या वापस लौटते समय सामयिक पड़ाव डालकर पथ पर आने वाले अन्य स्थानों का भी पर्यटन कर लेते है। जैसे भोपाल से भीमबेटका यात्रा के मध्य भोजपुर पर्यटन केन्द्र एवं इन्दौर से भोपाल पर्यटन स्थल के मध्य देवास व सीहोर केन्द्र यात्रा पथ के मुख्य पर्यटन केन्द्र है।

पर्यटकों का संचरण प्रतिरूप

देश के विभिन्न क्षेत्रों से पर्यटक अध्ययन क्षेत्र में भ्रमण हेतु आते है परन्तु प्राकृतिक केन्द्रों की ओर सर्वाधिक पर्यटक निकटवर्ती केन्द्रों से ही आते है। लगभग 61 प्रतिशत पर्यटक पिकनिक या सैर सपाटे के उद्देश्य से आते है।

तालिका क्रमांक – 1
मालवा : प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटकों का संचरण प्रतिरूप
(प्रतिशत में)

पर्यटको का संचरण (कि.मी. में)	प्राकृतिक पर्यटन स्थल
0–100	34
100–200	32
200–300	21
300–400	7
400–500	4
500 से अधिक	2

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

पर्यटकों के संचरण प्रतिरूप से स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक केन्द्रों के लिए 0–200 कि.मी. की दूरी महत्वपूर्ण है। क्योंकि अधिकांश पर्यटक (66 प्रतिशत) 200 कि.मी. से भी कम दूरी तय करके पर्यटन केन्द्र की ओर आते है, लगभग 34 प्रतिशत पर्यटक 0–100 कि.मी. व 32 प्रतिशत पर्यटक 100–200 कि.मी. की दूरी तय करके प्राकृतिक पर्यटन केन्द्र में आए। 500 कि.मी. से अधिक दूरी तय करके केवल 2 प्रतिशत पर्यटक ही प्राकृतिक केन्द्र की ओर प्रस्थान किए, जिनका मुख्य उद्देश्य अध्ययन या शोध कार्य से संबंधित था।

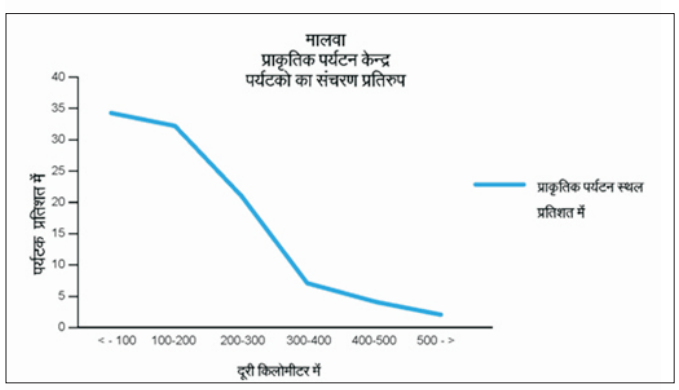

पर्यटकों की आयु – लिंग संरचना

पर्यटकों की आयु, लिंग व वैवाहिक संरचना के आधार पर ही पर्यटन सुविधाओं की मॉग निर्भर करती है यथा– कम आयु के पर्यटकों हेतु जहॉ पार्क, झुले, मेले, नौकायान, आदि की व्यवस्था करनी पडती है वही युवा पर्यटकों हेतु ट्रैकिंग, पैरासैलिंग, सफारी रेंज, आदि साहसिक खेलों का आयोजन करना पडता है।

तालिका क्रमांक – 2
मालवा : प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों मे पर्यटकों की आयु संरचना
(प्रतिशत में)

आयु वर्ग (वर्ष में)	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक
0–15	19	–
15–30	32	59
30–45	29	30
45–60	13	11
60 से अधिक	–	–

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों की ओर वहीं व्यक्ति अधिक आकर्षित हुए जो कम आयु के थे। लगभग 51 प्रतिशत देशी पर्यटक की आयु 30 वर्ष से भी कम थी। वही 60 वर्ष से अधिक आयु वाले एक भी पर्यटक प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों में दिखाई नहीं दिए। प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों में आने वाले 59 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों की औसतन आयु 15 से 30 वर्ष के मध्य थी।

तालिका क्रमांक – 3
मालवा : प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों मे पर्यटकों की लिंग संरचना
(प्रतिशत में)

लिंग संरचना	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक
स्त्री	38	47
पुरूष	62	53
विवाहित	57	20
अविवाहित	43	80

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

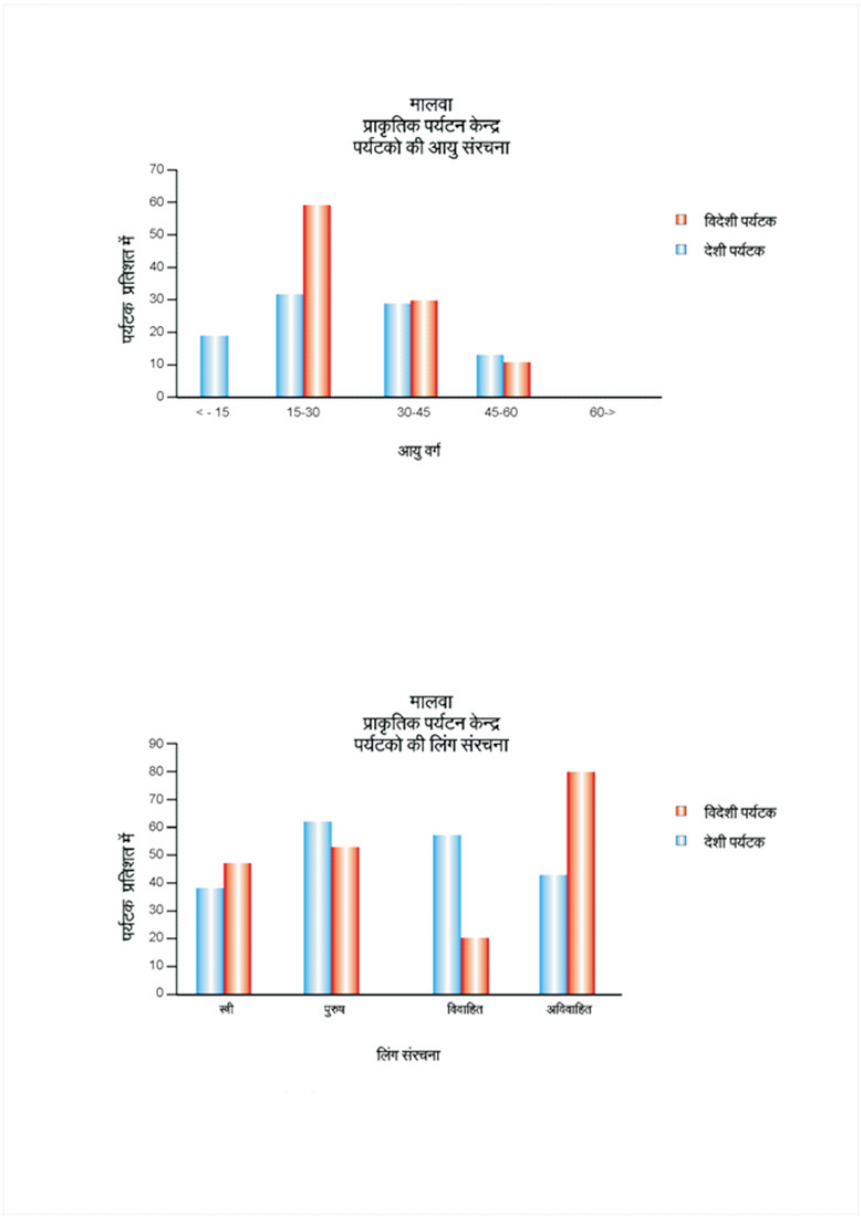

तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों में आने वाले देशी पर्यटकों के लिंगानुपात में काफी अन्तर है। लगभग 38 प्रतिशत पर्यटक स्त्री व 62 प्रतिशत पुरूष वर्ग के थे, वहीं 57 प्रतिशत पर्यटक विवाहित व 43 प्रतिशत अविवाहित पर्यटक थे परंतु विदेशी पर्यटको में लिंगानुपात लगभग समान था। 47 प्रतिशत पर्यटक स्त्री व 53 प्रतिशत पुरूष थे और 20 प्रतिशत पर्यटक विवाहित व 80 प्रतिशत पर्यटक अविवाहित थे।

पर्यटकों की विश्राम करने की अवधि

अध्ययन क्षेत्र के प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों पर पर्यटकों का आगमन निकटवर्तीय क्षेत्रों से अधिक होने के कारण इनके विश्राम करने की अवधी अपेक्षाकृत कम होती है।

तालिका क्रमांक –4
मालवा : प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों मे पर्यटकों की विश्राम की अवधि
(प्रतिशत में)

विश्राम की अवधि	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक
0–1 दिन	73	69
1–2 दिन	27	31
2–3 दिन	–	–

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों मे भ्रमण हेतु आए लगभग 73 प्रतिशत देशी पर्यटक व 69 प्रतिशत विदेशी पर्यटक एक या आधे दिन मे ही प्राकृतिक केन्द्रों का भ्रमण कर वापस लौट जाते है, वहीं 27 प्रतिशत देशी पर्यटक व 31 प्रतिशत विदेशी पर्यटक 1 या 2 दिन तक रूककर पर्यटन केन्द्रों का आनंद लेते है।

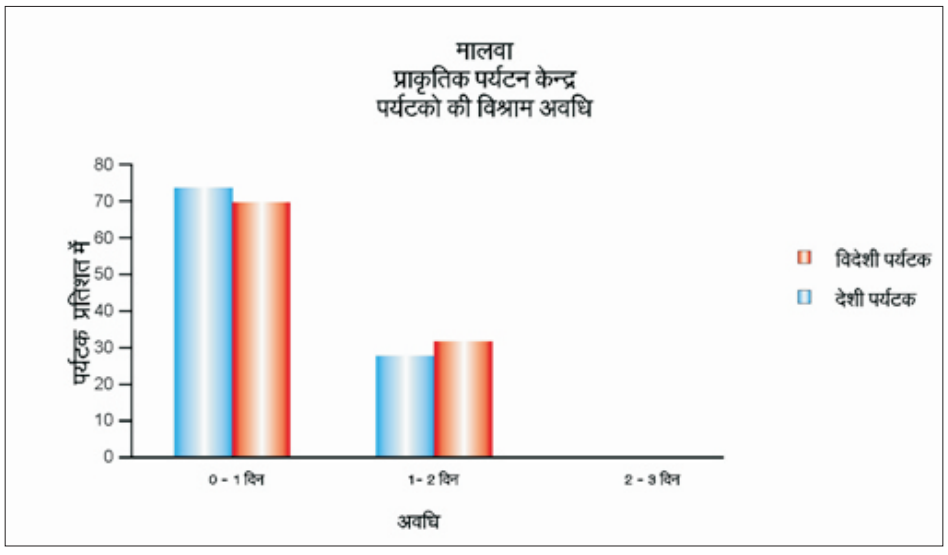

भ्रमण हेतु अनुकूल समय

विंध्य व सतपुडा श्रेणियों के मध्य स्थित मालवा प्रदेश की जलवायु मानसूनी प्रकार की है जो ग्रीष्म ऋतु में ना तो अधिक गर्म होती है और ना ही शीत ऋतु में अधिक ठंड जिससे वर्ष भर यहॉ का मौसम सुहावना रहता है। प्राकृतिक सौन्दर्य से सपन्न प्राकृतिक उद्यान, अभ्यारण्य, पक्षी विहार, नदियॉ, स्वच्छ जल धाराऍ, झील, झरनों, गुफाओं, किलों, व विविध प्रकार के नैसर्गिक सौन्दर्य से समृद्ध मालवा क्षेत्र पर्यटकों का मन सहज ही मोह लेता है। अपनी इन्ही विशेषताओं के कारण क्षेत्र में पर्यटको का आगमन वर्ष भर होता है। परन्तु प्राकृतिक केन्द्रों के भ्रमण हेतु अनुकूल समय वर्षा ऋतु के पश्चात ही माना गया है, क्योंकि इस समय यहॉ के प्राकृतिक सौन्दर्य व अनुपम छटा से यह क्षेत्र और भी आकर्षण व दर्शनीय हो जाता है।

तालिका क्रमांक – 5
मालवा : प्राकृतिक पर्यटन स्थल पर भ्रमण हेतु अनुकूल समय
(प्रतिशत में)

माह	पर्यटकों का आगमन	
	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक
जून से अप्रैल	29	38
मई से अगस्त	02	–
सितम्बर से दिसम्बर	69	62

स्त्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011–2012

प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों में भ्रमण हेतु सर्वाधिक पर्यटक सितम्बर से दिसम्बर के मध्य आते है। इस समय लगभग 69 प्रतिशत देशी व 62 प्रतिशत विदेशी पर्यटक आए थे। वहीं जनवरी से अप्रैल के मध्य लगभग 29 प्रतिशत देशी व 38 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ। सबसे कम पर्यटक मई से अगस्त के मध्य आते है, इस समय केवल 2 प्रतिशत पर्यटक ही प्राकृतिक केन्द्रों के भ्रमण हेतु आए। जिनमें एक भी पर्यटक विदेशी पर्यटक नही थे।

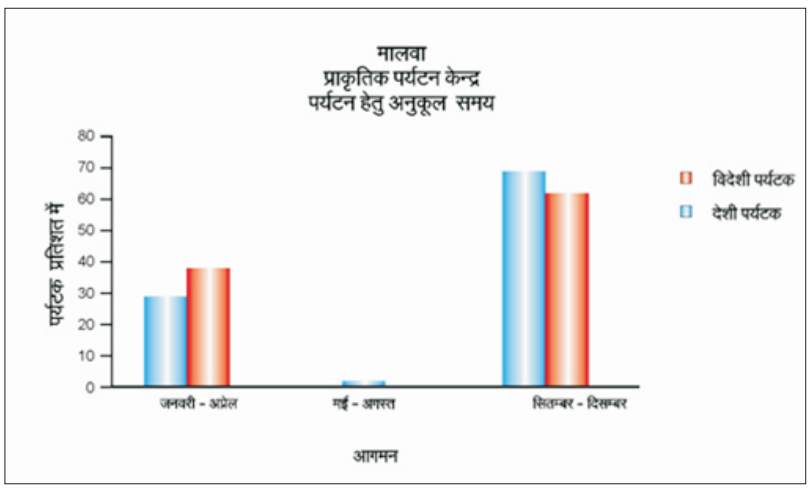

निष्कर्ष

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मालवा में पर्यटन विभाग की उपेक्षा व प्रचार–प्रसार की कमी के कारण प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों में पर्यटकों का आगमन निकटवर्तीय क्षेत्रों से अधिक होता है। भोपाल, भीमबेटका, मांडू, उदयगिरि, पर्यटन केन्द्रो को छोड दिया जाय तो अन्य पर्यटन केन्द्रो पर स्थानीय पर्यटको की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है जिसका प्रभाव निश्चित रूप से व्यवसाय पर पडता है। क्योंकि स्थानीय पर्यटको की खरीददारी में रूचि अपेक्षाकृत कम रहती है। इस संदर्भ में पर्यटन विकास निगम को चाहिए कि वह अपने राज्य में स्थित पर्यटन स्थलों का विज्ञापन समाचार–पत्र पत्रिकाएँ व टेलिविजन के माध्यम से प्रचारित करे। राष्ट्रीय व राज्य मार्गों के किनारे बड़े–बड़े होर्डिंग एवं रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड पर सूचनापट्ट लगाए जाने चाहिए जिससे पर्यटन केन्द्रों की जानकारी उपलब्ध हो सके और इन केन्द्रों पर पर्यटकों का आगमन अधिक हो सके।

संदर्भ सूची

1.Leiper, N (1990c) Partial industrialization of tourism system. Annals of Tourism, 17(4), 600-605
2.प्रश्नावली एवम क्षेत्र सर्वेक्षणए वर्ष 2011–2012

अनिमा
शोध छात्रा पी एच डी (भूगोल), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)